REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

पर्यावरण अवनयन : एक अध्ययन

कांबले डी.एस.
सहाय्यक प्राध्यापक भूगोल विभाग,
जवाहर कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर
ता.तुळजापूर, जिल्हा उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

सारांश :

आज हम 21 वी सदी मे प्रवेश कर चुके है , जिसमे विज्ञान और पर्यावरण प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे । इस प्रगति ने जहाँ एक ऑर ब्रह्मांण्ड के अनेक रहस्योंको सुलझाया है वही मानव का अनेका -नेक सुख- सुविधाए प्रदान की है । इन मानवीय विकास में पर्यावरण तो सदैव सहायक रहा है, परन्तु इस विकास के लिए हमने पर्यावरण की उपेक्षा की और उसका अनियन्त्रित शोषण किया । तात्कालिक लाभो के लालच में मानव ने स्वयं को अपने भविष्य को सकट में ढकेल दिया है । परिणाम स्वरूप जीवन के स्त्रोत पर्यावरण का अवनयन करने का प्रयास किया ।

शब्द कुंजी - मानव एवं पर्यावरण अवनयन .

प्रस्तावना :

आज हम 21 वी सदी मे प्रवेश कर चुके है, जिस मे विज्ञान और प्रोद्यागिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है । इस प्रगति ने जहॉ ब्रह्मांड के अनेक गुढ रहस्यों को सुलझाया है । वही दुसरी और मानव ने अनेक सुविधाए प्राप्त की है । इस मानवी प्रगति एवं विकास में पर्यावरण तो सदैव सहाय्यक रहा है, परंतु इस विकास की प्रक्रिया में पर्यावरण की उपेक्षा की और उसका अनियंत्रित शोषण किया है ।

पर्यावरण शब्द व्यापक अर्थोवाला है । इसका प्राय : समस्त पारिस्थिति की अथवा परिवृत्ति (Total Set of Surroundings) परिवेश, आस-पास अथवा पास-पडोस, जीवन यापन एवं कार्य प्रणाली को दशायें, वनस्पतियों एवं जीव जन्तुंओ के विकास की दशाये आदि अर्था में प्रयोग किया जाता है, वास्तव मे environment शब्द फ्रेंच भाषा के enviorner शब्द से बना है जिसका तात्पर्य समस्त परिस्थितिकी होता है । जिसमें सभी स्थितियाँ परिस्थितियॉ, दशाये आदि जो वनस्पतियों एवं जीव-जन्तुओ को प्रभावित करती है ।

पर्यावरण एक ऐसा रंगमंच है जिस पर मानव की समस्त क्रियायें अभिव्यक्त होती है । पर्यावरणीय सामंजस्य पर मानव की क्रियाये मे निर्भर है । वास्तव मे मनुष्य भी पर्यावरण का एक अंग है । मानव -विशिष्ट पर्यावरण मे जन्म लेकर उसके उपादानों का उपभोग करता हुआ । इसमें काफी कुछ परिर्तन करता है और पर्यावरण का निरंतर अवनयन करता रहा.

उदेश :-

1) पर्यावरण अवनयन का अध्ययन करना ।
2) पर्यावरण अवनयनका और

पर्यावरण का अध्ययन करना ।

3) पर्यावरण / संवर्धन के लिए किए जानेवाले प्रयासों को जानना ।
4) प्राप्त परिस्थितीयों पर्यावरण अवनयन कम करने के लिए उपाय करना ।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध विषयपूर्ण रूपसे द्वितीयक संमको पर आधारित है । जिसका संकलन मासिक पत्रिकाओ संदर्भिका से किया गया है ।

विषय विश्लेषण :-

प्राकृतिक पर्यावरण विविधतापूर्ण प्रकृति की अनोखी संरचना है । इसमें जैविक एवं भौतिक संघटनों का संम्मिश्रित स्वरूप परिलाक्षित होता है । इनमें पारंपारिक सम्बन्ध एवं सामंजस्य विद्यमान है । प्राकृतिक पर्यावरण तन्त्र जैविक- भौतिक कारको द्वारा नियंत्रित एवं संचलित है । इनकी क्रिया-विधि समय एवं स्थान सापेक्ष होती है । जिस कारण इसमें परिवर्तन, सृजन एवं संवर्दन की क्रिया सक्रिय रहती है । थोडे बहुत परिवर्तनों के साथ सम्पूर्ण पर्यावरण का स्वरूप स्थायी बना रहता है । कभी-कभी भौतिक एवं जैविक कारकों की क्रियाविधि अनियंत्रित होती है जिस कारण स्थान विशेष के जैविक-अजैविक संघटको में परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है । यह परिवर्तन अस्थायी होता है ।

प्राकृतिक परिस्थितिक तन्त्रोमें अवासित जीवों के लिए भौतिक प्रक्रमों द्वारा अनेक प्रकार के आवासों का निर्माण किया जाता है । जैविक समुदाय भौतिक पर्यावरण में परिवर्तन करता है जिसका प्रभाव पारिस्थिक तन्त्र पर पडता है । प्राकृतिक पर्यावरणर का सृजन एवं त्वरित घटना जहाँ है अपितु पृथ्वी के उदभव काल मे से प्रारम्भ हो कर है बनता बिगडता हुआ वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुआ है । ऐतिहासिक काल में अनेक परिस्थितिक तन्त्र निर्माण एवं नष्ट हुए । तथा अनेक के रूपों मे परिवर्तन भी हुआ है । मानव संस्कृति का विकास बिना पर्यावरण के तत्वों के उपयोग के नही हो सकता था । अतीत से वर्तमान तक इन्ही तत्वों की सहाय्यता से अन्यान्य नवीन विधियों का विकास किया गया । इनकी सहायता से ही प्राकृतिक संसाधनो में अनेक परिवर्तन उत्पन्न हो गये ।

19 वी शताब्दी औद्यागिक क्रान्ति का युग माना जाता है । इस युग में मानव अन्यान्य नुतन प्रविधियों एवं उपकरणों से सुसज्जित होकर पर्यावरणीय तत्वों का अधिक से अधिक उपयोग करने लगा । पर्यावरण उत्पादानो के स्वरूप में परिवर्तन कर अपने लिए उपयोगी बना लिया । फलस्परूप में विश्व स्तर पर तीव्र गति से परिर्तन प्रारम्भ हो गया । मनुष्य चुप नही बैठा है यह निरन्तर अपनी सुख-सुविधा की वस्तुओं को तैयार करने में लगा है । उसकी आवश्यकताये ज्यो- ज्यो बढती जा रही है पर्यावरण का दोहन बढता जा रहा है । मानव बुध्दिमान क्रीयाशील प्राणी है।

विश्वस्तर पर जनसंख्या में तीव्र गति से वृध्दि हो रही है । प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जा रहा है । पर्यावरण का मौलिक स्वरूप परिवर्तीत हो रहा है । मनुष्य लोलुपतापूर्ण पर्यावरण विदोंहन से प्रकृति के अवशेष भाग को नष्ट करने में लगा है । इसके लिए उसने अनेक प्रौद्योगिकी का निर्माण किया है । जिससे उसके क्रिया-कलापे मे वृध्दि हो रही है ।

प्रकृति में सन्तुलन की क्रिया सभी समय सक्रिय रहती है । परंन्तु वर्तमान समय में भौतिक पर्यावरण के कुछ संघटक इतने परिवर्तित हो गये है कि उनमें संन्तुलन पुनस्थार्पित होना सम्भव नही है । अन्तः निर्मित होमियोस्टेटिक क्रियाविधि द्वारा भौतिक पर्यावरण में असन्तुलन स्थापित होता है परंतु इसकी एक सीमा है । जब संघटको मे परिवर्तन अधिक हो जाता है तब इनमें संतुलन की स्थापना होना सम्भव नही है।

1) मानव भौतिक पर्यावचरण का सबसे महत्वपूर्ण कारक माना जाना है । संस्कृति के विकास के साथ-साथ इसने पर्यावरण में उथल-पुथल मचा दिया है । जिससे पर्यावरण के स्वरूप में भीषण परिवर्तन हो गया है । इस प्रकार मानव द्वारा उत्पन्न परिवर्तन को पर्यावरण अवनयन कहा जाता है ।

2) पर्यावरण के भौतिक संघटनो में उत्पन्न परिवर्तन जिसकी क्षतिपूर्ति सम्भव न हो इसे पर्यावरन अवनयन कहा जाता है ।

पर्यावरण अवनयन के प्रकार- (Types of Environmental Degradation) मानव एवं प्राकृतिक कारकों के प्रभाव से उत्पनन घटनाओं के कारण पर्यावरण में भीषण परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है । जिसका प्रभाव पर्यावरण की गुणवत्ता एवं जीव-वनस्पति जगत पर पडता है । पर्यावरन अवनयन को निम्नलिखित वर्गो मे वर्गीकृत किया जाता है ।

अ) प्रकोपों से उत्पन्न अवनयन :

1) प्राकृतिक प्रकोप 2) मानवनिर्मित प्रकोप

ब) प्रदुषण से उत्पन्न अवनयन - 1) भौतिक प्रदूषण 2) समाजिक- सांस्कृतिक प्रदूषण

पर्यावरण अवनयन के कारण :

मानव की विकासशील क्रियाओं के कारण पर्यावरण की गुणवत्ता में तीव्र गति से -हास हो रहा है जिससे पर्यावरण संकट (Environmental crisis) उत्पन्न हो गया है । मनुष्य अपने आर्थिक, समाजिक, वैज्ञानिक, तकनीकी विकास तीव्र गति से करने में संलग्न है । जहाँ वह विकास की चरन सीमा पर पहूँच रहा है । वही पर्यावरण का विनाश भी कर रहा है । जो मनुष्य की विकसित संस्कृति को एक दिन समाप्त कर देगा । पर्यावरण अवनयन से आज सारा विश्व चिन्तित है ।

मनुष्य भौतिक वादी क्रियाये पर्यावरण अवनयन की मुख्य कारक है । ज्यो ज्यों मनुष्य संसाधनों के उपभोग के लिए सक्रिय हो रहा है पर्यावरण एवं इसके मध्य के सम्बन्ध में कटुता आ रही है । पर्यावरण के प्रकृति द्वारा अनेक सम्भावानायें उत्पन्न की गयी है । परंन्तु मनुष्य उन सम्भावनाओं से आगे बढकर पर्यावरण का विनाश कर रहा है । मानव मानवं नही रहा गया है वह आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी मनुष्य हो गया है । अपने साथ-साथ वह दुसरों के लिए भी पर्यावरण संकट उत्पन्न कर लिया है । औद्योगिकिरण-नागरीकरण की तीव्रता, प्रौद्योगिक प्रगति, संसाधनों का अंधाधुंध प्रयोग आदि के द्वारा प्रकृति का स्वरूप निरन्तर बिगडता जा रहा है । पर्यावरण के प्रभावी कारक निम्मंकित वर्गीकृत किया है ।

1) मानवीय कारक 2) प्राकृतिक कारक

1) मानवीय कारक : मानवी क्रिया संस्कृति विकास के लिए नितान्त आवश्यक है परन्तु सीमा अतिक्रमन से संस्कृति विनाश से एक सुसंस्कृत मानव बन गया है । उसकी क्रिया पर्यावरण में बढती गयी जिससे पर्यावरण और मानव इससे मध्य संबंन्ध बिगडता गया ।

1) वन कटाव : वन प्रकृति के स्वरूप को अलंकृत करने वाला सबसे महत्वपूर्ण साकार रूप है । मानव ने इसके कुछ गुणों की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त कर लिया । वन्य वस्तुओं के गुणों के उपयोग के लिए वह उनका दोहन करने लगा । मौल्यवान वृक्ष एवं जीव -जन्तु नष्ट होने लगे वनों का क्षेत्र सीमित होने लगा । उद्योगों के लिए कच्चे पदार्थों की प्राप्ति, भवन निर्माण के लिए उपयोगी लकडियॉ , जीव-जन्तुओं के लिए सुरक्षित, मृदा अपरदन से सुरक्षा , धरातली वाहीजल के प्रभाव में कमी , Co_2 गैसों का उपयोग, औषधियाँ आदि वनों के मौलिक गुण है जिनके कारण वनों का विनाश हो रहा है । मानव समाज की संमृध्दि, कल्याण, स्वास्थ्य तथा देश की अर्थव्यवस्था वन पर निर्भर है । फलस्वरूप इसे राष्ट्र की जवीन रेखा (life line) कहा जाता है । भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग ने स्पष्ट किया है की देश की कुल भौगोलिक भूमि के 24.4 प्रातिशत भाग पर वनों का विस्तार है । पर्यावरण संतुलन के लिए 33 प्रतिशत भू-भाग पर बनों का विस्तार होना आवश्यक है । विश्वस्तर पर वनभूमि का कृषिभूमि में परिवर्तन हो रहा है ।फलस्वरूप वन क्षेत्र

निरंतर सिकुडता जा रहा है । उत्तर अमेरिका, सवाना, प्रेअरी, द.अमेरिका -पंपाज, रूस स्टेपी , द.अफ्रिका - व्हेल्ड, न्यूझीलंड-डाऊन्स आदि.संसार मे भागो में झूमिंग कृषि, अतिचारण, जंगलो में आग लगा देना, बहुतसे उद्योगों में लकडियों का प्रयोग कच्चा माल, अनेक वन क्षेत्रों में विशाल नदी घाटी पर योजनाये उत्तरांचलप्रदेश टिहरी बॉध परियोजना, गुजरात- सरदार सरोवर परियोजना आदि ।

2) कृषि-क्षेत्र का विस्तार : - मनुष्य के जीवन निर्वान के लिए खाद्य एवं जनसंख्या में संतुलन आवश्यक है । जनसंख्या की वृध्दी 100 वर्षो मे आधिक हुई । फलस्वरूप कृषिका विकास आवश्यक है । कृषि क्षेत्रों का विस्तार किया गया । जिससे वन क्षेत्रों पर दबाव निरन्तर बढता गया । वन क्षेत्र निंरन्तर छोटा होता गया । वनों का निरन्तर - हास से जैव-विविधता पर प्रभाव रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करनेसे प्रदूषण उत्पन्न हो रहा है , असिंचित क्षेत्रों में बॉधो व नहरों का निर्माण, जीव-जन्तु का स्थानान्तरित हो रहे है या मर रहे है ।

3) कृषि उत्पादन मे वृध्दि : विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वृध्दि हो रही है । भरण- पोषण के लिए खाद्यानों मे विकास करना आवश्यक हो गया है। फसलों से उत्पादन अधिक लेने के लिए अनेक प्रकार के रासायनिक उर्वरको, कीटकनाशकों, रोगनाशी एवं शाकनासी रासायनों का प्रयोग किया जाता है। रासायनिक तत्व मृदा में संचित होते रहते है । वर्षा मे समय जलके साथ प्रवाहित होकर तलाबों नदी आदि के जल में घुलते रहते है । यह रासायनिक तत्व जल में प्रवेश कर जल प्रदूषण उत्पन्न करते है । प्रदूषित जल का प्रभाव जल जीवों, मनुष्य एवं इससे पोषित वनस्पतियों पर पडता है ।

4) जनसंख्या वृध्दि : मानव जनसंख्या की वृध्दी के साथ आवश्यकताये निरंन्तर बढ रही है जिस कारण प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग आधिक हो रहा है । फल-स्वरूप पर्यावरण परिस्थितिके लीये, असंतुलन उत्पन्न हो रहा है । कृषि क्षेत्रों का विस्तार, नागरीकरण, औद्योगिकरण, वन-विनाश आदि जनसंख्या वृध्दि के ही परिणाम है ।

ब) प्राकृतिक कारक तथा पर्यावरण अवनयन : - प्राकृतिक कारकों अथवा तत्वों के कारण प्रकृति की व्यवस्था में अव्यवस्था उत्पन्न होती है । कभी-कभी यह व्यवस्था अत्यन्त मंन्द गति तथा कभी-कभी तीव्र गति एवं त्वरित भंग होती है, मंन्द गति से प्रकृति में उत्पन्न होने वाली अव्यवस्था दूरगामी परिणाम प्रस्तुत करती है जबकि तीव्र गति एवं त्वरित होनेवाली अव्यवस्था परिणाम प्रस्तुत करती है ।

प्राकृतिक कारकों को निम्नंकित रूपों में समझा जा सकता है ।

क) प्राकृतिक घटनाये :- अनेक प्राकृतिक घटनायें- ज्वालामूखी, भुकंप, भू-स्खलन, वनाग्नि, आंधी-तुफान, अतिवृष्टि, हिमावरण, हिमस्खलन आदि द्वारा पर्यावरण प्रभावित होता है ।

ख) पर्यावरण के लिए हानिकारक पेड- पौंधे - प्रकृति प्रदत्त अनेक पौंधे वातावरण के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देते है । परंतु कुछ पौंधे ऐसे भी है जिनसे वातावरण प्रदूषित होता है ।

1) चटक चांदणी अथवा गाजर घास : -

गाजर घास का नाम पारथोनियम इस्टोफोरस है । 1954 ई.मे. तत्कालीन प्रधनमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा मगाये गये गेहूँ के साथ दक्षिण अमेरिका से इसका बीज आया था । सडके किनारे, रेल के लाईन के किनारे, नालियों, भवानो के पास, पर्वतीय क्षेत्रों में बडी तीव्र गति से इसका विकास हो रहा है । इस घास के एक पौधे से लगभग 20 हजार बीज तैयार होते है । गाजर घास स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

इससे खांसी, दमा, खाज, खुजली, कैंसर आदि रोग उत्पन्न होते है । इसके उखाड कर जलाना तथा फेंकना आवश्यक है ।

2) जलकुम्भी - इस वनस्पतिका नाम अण्डक्रानिया क्रेसी पेस है । यह वाटर हायसिन्था पाण्टेडेरिएसी कुल का पौधा है । इसका सर्व प्रथम उत्पादन दक्षिणी अमेरिका में किया गया था । नील- लोहित पुष्पोवाली यह वनस्पिती देखने में अत्यन्त सुन्दर तथा हरी -भरी होती है । सुन्दरता के कारण ही इसका प्रवेश भारत में हो गया ! इसके एक पुंच्छे में लगभग 34 पुष्प खिलते है । इसका विकास तीव्र गति से होता है । जलकुंभी चटाई को भॉति झील, तालाब आदिको जल सतह पर तैरती रहती है । कभी कभी सम्पूर्ण तालाब अथवा झील को ढकलेती है । जिससे जलीय जीव -जन्तु मर जाते है ।

3) लैनटाना :- लैनटाना का पौधा पर्यावरण के लिए अत्यंत हानिकारक है इसका पर्वतीय तथा अन्य क्षेत्रों मे तीव्र गति से विकास हो रहा है ।पर्यावरण अवनयन के कारको के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मानव की विकासशील क्रियायें ही पर्यावरण की मौलिकता समाप्त कर रही है । विकासिय कार्य प्रवृत्ति तथा पर्यावरण की सुरक्षा एक दुसरे के विपरीत है । जनसंख्या को वृध्दि के साथ विकासशील क्रियाओं को विकसित एवं परिष्कृत करना आवश्यक है । साथ ही साथ मनुष्य के अस्तित्व, जीव-जंन्तू के लिए पर्यावरण की शुध्दता भी नितान्त आवश्यक है ऐसी वस्तुस्थिति में मनुष्य को पर्यावरण के साथ स्वस्थ्य एवं सन्तुलित व्यवहार करना होगा । विश्व के वैज्ञानिक इस विषय पर चिन्तनशील है ।

निष्कर्ष : -

निष्कर्ष के रूप मे कह जा सकता है । कि पर्यावरण, वनों का महत्व, वृक्षारोपण के महत्व तथा प्रदुषण पर्यावरण अवनयन के बारे जानकारी के बारे मे जानना ।

संदर्भिका

1) डॉ.एम.एस.सिसोदिया - युजीसी नेट्/ सेट् भूगोल - उपकार प्रकाशन , आगरा
2) डॉ.जाट- युजीसी नेट्/ सेट् भूगोल गितांजली प्रकाशन जयपूर
3) अहिरराव वराट पर्यावरण भूविज्ञान निराली प्रकाशन पुणे
4) अलका गौतम पर्यावरण भूगोल रस्तोगी प्रकाशन मेरठ .